हिक! कोपोटेमस

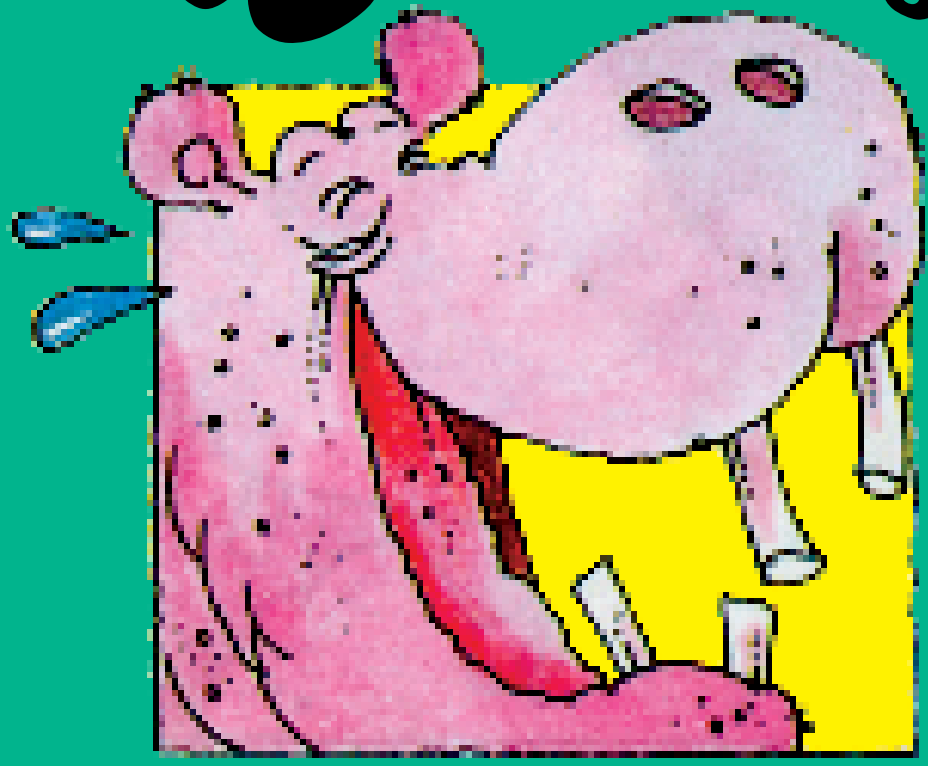

गीता धर्मराजन

चित्राँकनः अतनु रॉय

कथा की 300एम थिंकबुक

एक दिन, भरी दोपहर में, गुलमोहर जंगल के सफेद लिलि वाले तालाब में एक बहुत ही भारी-भरकम चीज़ अचानक आ गिरी।

धम्म! धड़ाम ...!

छपाक ...!

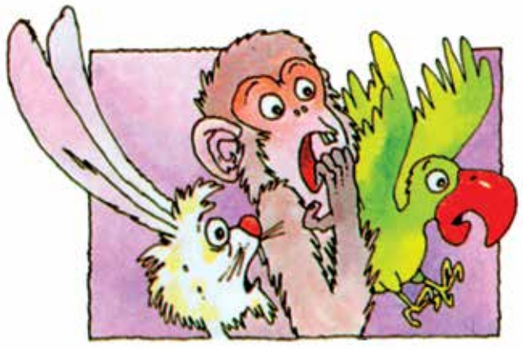

मुयल खरगोश, हनु
बंदर और पोपट तोता
ज़ोर से चिल्लाए ...

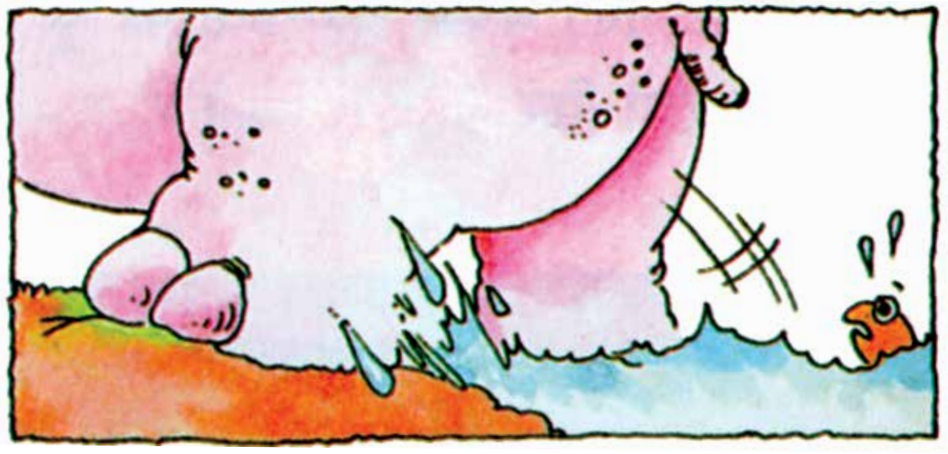

सबके सब डरने में इतने व्यस्त थे कि किसी ने भी उस भारी-भरकम चीज़ को तालाब से बाहर निकलते हुए नहीं देखा, सिवाय मुयल के।

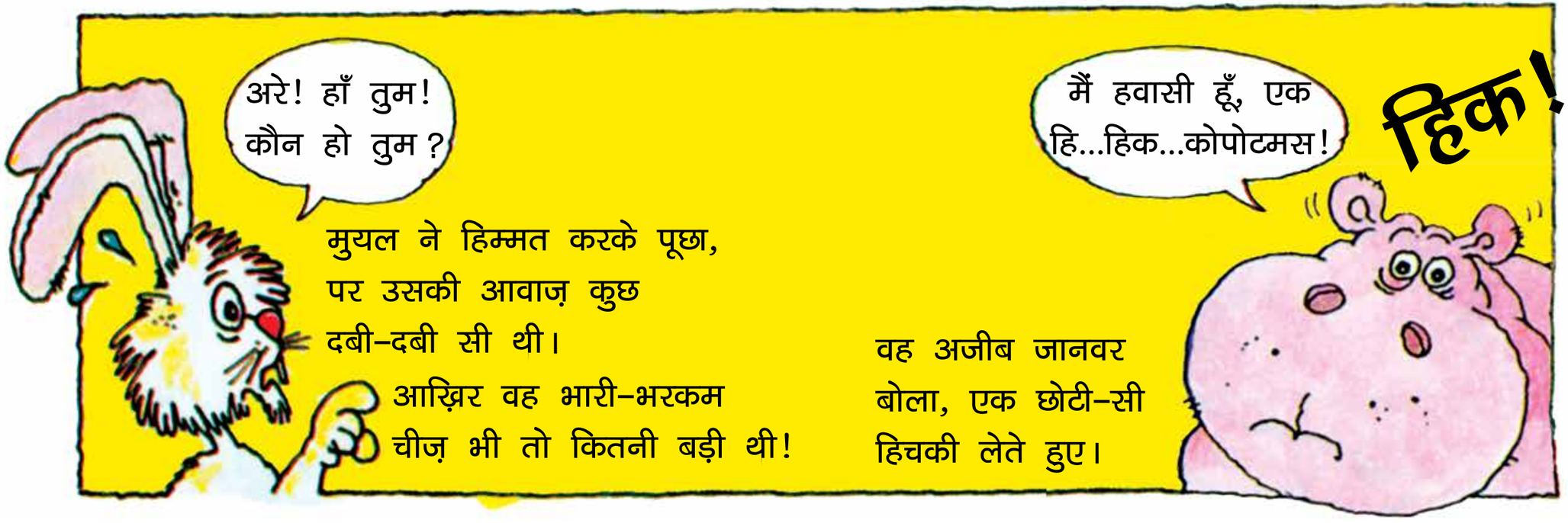

मुयल ने हिम्मत करके पूछा,
पर उसकी आवाज़ कुछ
दबी-दबी सी थी।

आख़िर वह भारी-भरकम
चीज़ भी तो कितनी बड़ी थी!

वह अजीब जानवर
बोला, एक छोटी-सी
हिचकी लेते हुए।

हिप्पोपोटमस! हिप्पो तो अफ़्रीका में रहते हैं। तुम तो अपने घर से बहुत दूर आ गए हो, है ना?

रात्रि उल्लू ने पूछा, आस-पास हो रहे शोर ने उसे नींद से जो जगा दिया था।

हवासी बिलख-बिलख कर रोने लगा।

“मुझे हिक...घ...हिक...घर जाना है!” वह पैर पटकते हुए बोला।

पर तुम यहाँ आए कैसे?
इला कीड़े ने पूछा।

भारत
अफ़्रीका

मैं अपनी माँ के साथ था। अचानक मुझे एक बड़ी-सी हिचकी आई और हिक...सर्र... मैं हवा में जा उड़ा। मेरी माँ मुझे रोक न पाई, मेरी सारी मौसियाँ मुझे रोक न पाईं, यहाँ तक कि मेरे शक्तिशाली पापा भी मुझे रोक न पाए। और फिर मैं यहाँ आ पहुँचा! मुझे डर है कि कहीं एक और बड़ी-सी हिचकी मुझे उड़ा न ले जाए, शायद कभी नीचे न आने के लिए!
हवासी बोला, अपने आस-पास खड़े सभी जानवरों को देखते हुए।

“हम इन हिचकियों से छुटकारा दिलाने में तुम्हारी मदद करेंगे,” मुयल बोली।

“और मुझे वापस घर पहुँचाने में भी?” हवासी ने भरोसा जताते हुए पूछा।

“बिल्कुल! हम पूरी कोशिश करेंगे!” हनु बोला।

“चलो, सभी दोस्तों को बुला लेते हैं, शायद उनमें से किसी के पास हिचकी दूर करने का कोई बढ़िया उपाय हो,” यह कहते हुए मुयल निकल पड़ी, हाथियों, बाघों, चमगादड़ों, मकड़ियों और बाकी सभी को बुलाने।

अब सब बैठकर सोचने लगे।

“पानी!” अचानक जंगली लोमड़ी बोली, “हम लोमड़ियों की हिचकियाँ तो पानी से ही ठीक होती हैं। और यह हमेशा काम करता है ... हमेशा!”

“धन्यवाद!” हवासी बोला, “पानी तो मुझे बेहद पसंद है।”

हवासी ने तुरंत ही सफेद लिलि वाले तालाब में पैर रखा और ... गायब हो गया!

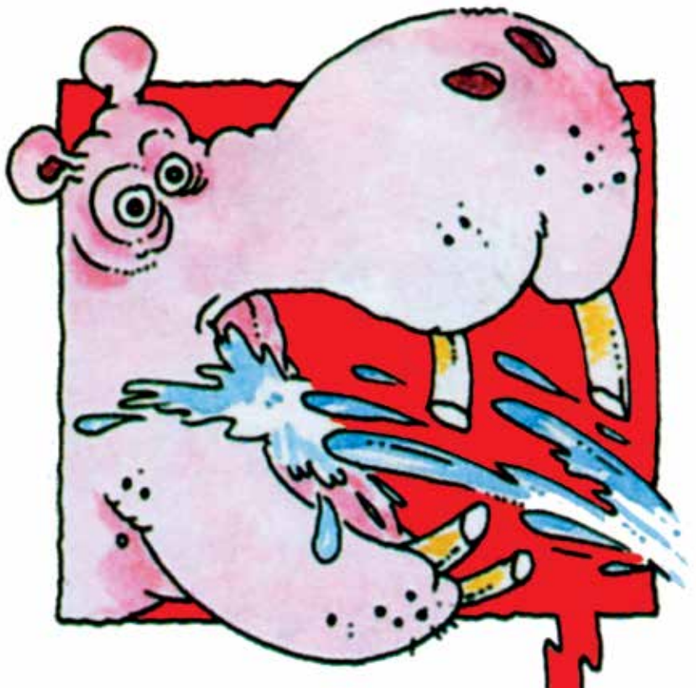

“अरे, यह कहीं डूब तो नहीं गया?” ही हाथी ने घबराकर पूछा जब हवासी कुछ पलों तक पानी से बाहर नहीं आया।

“उसे देखकर लगता तो नहीं कि वह तैरना जानता है,” का-का कौवे ने चिंतित स्वर में कहा।

और तभी, हवासी हँसते हुए पानी से बाहर निकला।

“यह तो एकदम घर जैसा था,” हवासी खिलखिलाते हुए बोला, “माफ़ करना! मैं तो भूल ही गया था कि मैं कहाँ हूँ और मैं सैर पर निकल गया।”

“सैर? पानी के नीचे?” ही हाथी ने आश्चर्य से पूछा।

“मुझे तालाब के तल में सैर करना बहुत अच्छा लगता है! मैं एक अच्छा तैराक भी हूँ। और मैं तुम्हें ज़मीन पर रेस में भी हरा ...”

तभी अचानक ...

सभी जानवरों ने हवासी की हिचकी रोकने के उपाय सुझाए।

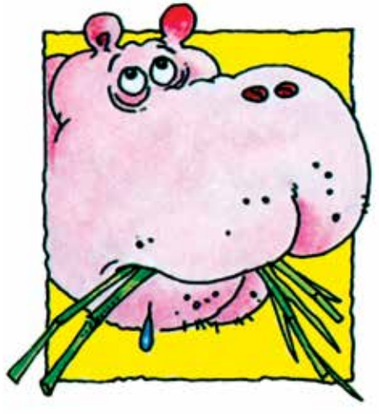

... चीनी खाना ...

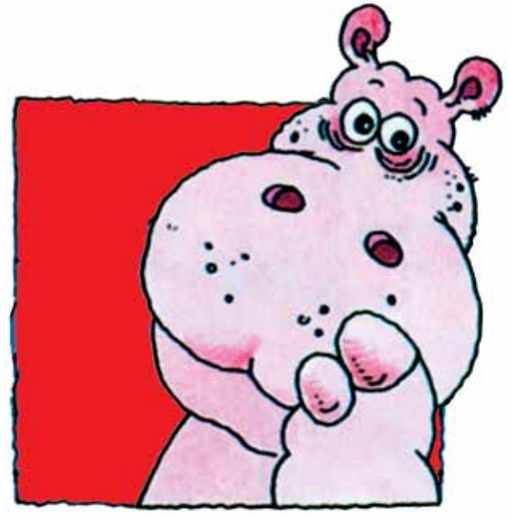

... साँस रोकना ...

और हवासी को डराना ...

पर हवासी तो कितना बड़ा था, वह किस चीज़ से डरता?

तभी ...

सुनो! अगर हमने हवासी की हिचकियाँ दूर कर दीं तो वह घर कैसे पहुँच पाएगा?

"अरे हाँ!" हनु ने तेजस बाघ की बात पर एक गहरी साँस लेते हुए कहा, "यह तो हमने सोचा ही नहीं!"

"असल में तो हमें एक ऐसा तरीका ढूँढ़ना चाहिए जिससे उसे एक बड़ी-सी हिचकी आए और वह अपने घर पहुँच जाए, ठीक उसी तरह जिस तरह वह आया था!" पोपट तोता बोला।

"चलो उसे गुदगुदाएँ!" चींटियाँ बोलीं। "हम उसे ऐसे मज़ेदार चुटकुले सुनाएँगे कि वह सीधा अपने घर पहुँच जाएगा," सभी बंदरों ने कहा। "क्या तुम तैयार हो, हवासी?" "बेशक!" हवासी चिल्लाया, उसकी छोटी-छोटी आँखें तारों-सी चमकने लगीं। "मैं आ रहा हूँ माँ!"

चींटियाँ हवासी को गुदगुदाने लगीं।
और सभी जानवर हवासी को
चुटकुले और पहेलियाँ सुनाने लगे।

एक हिप्पो से भी ज़्यादा ज़ोर से कौन हँसता है?

दो हिप्पो!

मेंढक अपने पैसे कहाँ रखते हैं?

'रिवर बैंक' यानि नदी के किनारे!

बंदर, हाथी, पक्षी सभी अपने-अपने चुटकुले सुनाते रहे और ज़ोर-ज़ोर से हँसते रहे।

और उनके बीचों-बीच था
हवासी, हँसी से लोट-पोट।
उसने पहले कभी इतने
सारे चुटकुले नहीं सुने थे
... कभी भी नहीं!

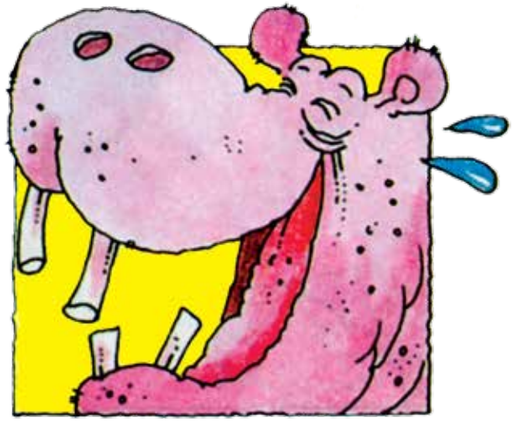

बगुला एक पैर पर क्यों खड़ा रहता है?

क्योंकि अगर वह दूसरा पैर भी उठाएगा तो गिर पड़ेगा!

सात फुट लम्बा गोरिल्ला कहाँ सोता है?

जहाँ उसका मन करे!

तभी ... हाथी के एक मज़ेदार चुटकुले के बीच
हवासी को एक ज़ोरदार हिचकी आई।

सचमुच बड़ी, एक हिप्पो जितनी विशाल

हिचकी!

और हवासी उड़ता हुआ गया,
बरगद के पेड़ के ऊपर से,
ठीक उसी तरह जिस तरह
वह आया था।

“अलविदा दोस्तों! और धन्यवाद!” हवासी खुशी से चिल्लाया।

“शुभयात्रा!” सभी जानवरों ने एक स्वर में कहा।

वापस घर

और... अरे हाँ, इससे पहले कि मैं भूल जाऊँ, कल ही गुलमोहर जंगल के जानवरों को ‘धन्यवाद!’ की एक गुरगुराहट सुनाई दी, अफ़्रीका के म्ज़ीमा झरनों से।

हाँ, आपने सही सोचा! वह हवासी हिप्पोपोटमस की ही थी।

बताओ कौन?

इनके नाम का मतलब है 'दरियाई घोड़ा'। यह सूअर की तरह दिखते है और विशाल व भारी होते है (आप और आप जैसे दो-सौ लोगों जितना होता है इनका वज़न!) पर यह आप से तेज़ दौड़ सकते है और अच्छे तैराक भी होते है। बताओ कौन है ये गज़ब के जानवर?

हिप्पोपोटमस !

हिप्पो की पीठ और पक्षों की खाल आपकी चार उंगलियों की चौड़ाई जितनी मोटी होती है और शायद इसलिए हिप्पो किसी और जानवर से नहीं डरते, सिवाय जंगल के राजा शेर के!

हिप्पो का मुँह इतना बड़ा होता है कि आप उसमें आसानी से पैर रख सकते हैं–ऐसा नहीं है कि आप यह करना चाहेंगे पर फिर भी! वैसे तो हिप्पो शांत स्वभाव के जानवर होते हैं, उन्हें परेशान न किया जाए तो, पर अगर उन्हें गुस्सा आ जाए तो वे अपने मज़बूत जबड़ों से एक पूरी–की–पूरी नाव तक को कुचल सकते हैं।

हिप्पो को बेहद पसंद है अफ़्रीका की नदियों में दिन भर आराम फ़रमाना। कभी–कभी वे पानी के तल में सैर करने निकल जाते हैं और वहाँ से मुँह–भर पौधे इकट्ठा कर लाते हैं (हिप्पो शाकाहारी होते हैं)। उनके नथुने खाल के पल्लों से ढके होते हैं ताकि पानी उनके फेफड़ों में न जाए।

शिशु हिप्पो पानी के भीतर पैदा होते हैं, और वह चलने से भी पहले तैरना सीख लेते हैं। जैसे ही शिशु हिप्पो चलना सीख लेते हैं, वे घूमने निकल जाते हैं। मादा हिप्पो उन्हें प्यार से वापस बुलाती है और उन्हें खाना खोजना, खतरों से दूर रहना और खूब मज़ा करना सिखाती है।

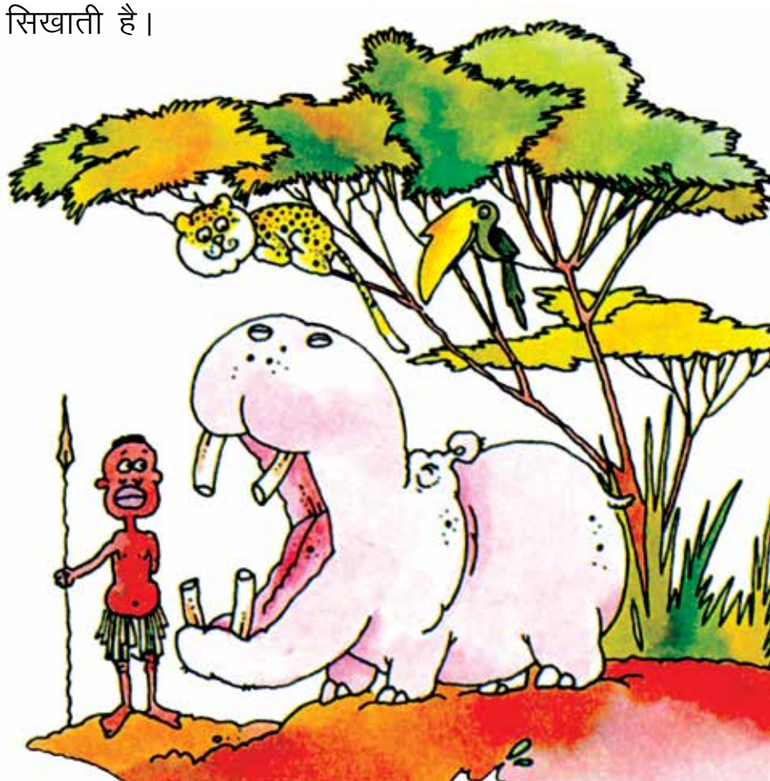

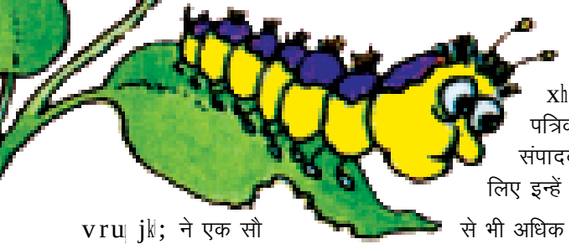

xhrk /kejktu बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किये गये इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

vrq jk; ने एक सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्रकारी की है। उन्होंने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। उत्कृष्ट रंगों से सजी उनकी विस्तृत छवियाँ नन्हे पाठकों के मन को छू लेती हैं। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि *इंडिया टुडे* में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनक फ़ॉर इलस्ट्रेशन। रॉय का स्टूडियो गुड़गाँव में है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

पहला हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2014, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा, 2021
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

इसकी ग्रीन श्रृंखला में

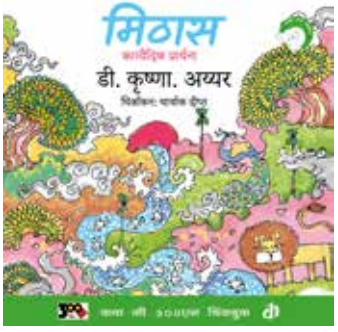

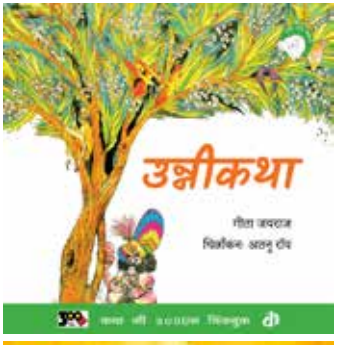

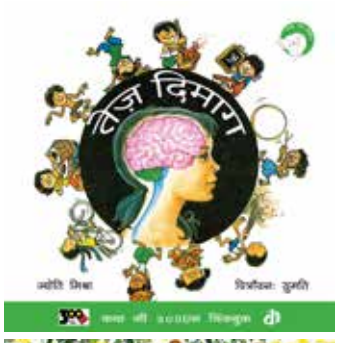

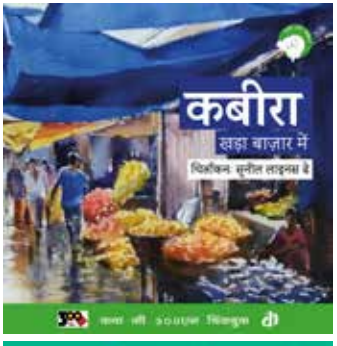

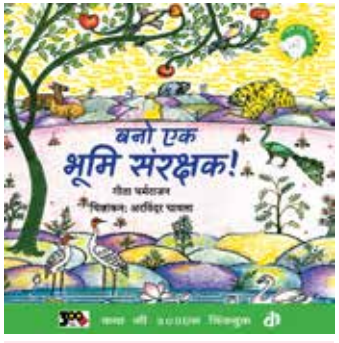

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
www.katha.org
₹ xxx